॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# आर्य-प्रेरणा

( आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक पत्र )

वर्ष-2, अंक-9, मास अप्रैल 2023 विक्रमी संवत् 2080 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123

कुल पृष्ठ 8 एक प्रति 5 रूपये वार्षिक शुल्क 50/- रूपये आजीवन 500/- रूपये

सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री www.aryasamajrajandernagar.org दूरभाष:- 011-40224701

# स्वदेशी स्वाभिमानी व सुसेवाभावी सन्त महात्मा हंसराज जी

❑ आचार्य आर्यनरेश

स्वाभिमानी स्वदेश प्रेमी, योग्य पिता श्री चून्नी लाल जी की सुयोग्य सन्तान का जन्म 19 अप्रैल 1864 को वीर भूमि पंजाब के बजवाड़ा ग्राम में हुआ था। आपकी आयु मात्र 10 वर्ष थी जब पिता श्री स्वर्ग सिधार गए। पूज्या माता के आशीर्वाद व भ्राता मुलखराज के सहयोग से आपकी जीवन यात्रा आगे बढ़ी।

आपके पिता श्री अंग्रेजी सरकार में सेवारत थे, परन्तु स्वदेशियत की भावना के कारण गुलामी की नौकरी छोड़कर आप स्वतन्त्रकार्य करने लगे। पिता के पावन संस्कारों की सुगंध से महात्मा श्री हंसराज जी का जीवन भी सुगंधित हुआ, जिससे आपका स्वभाव विनम्र, धर्मपरायण व मधुरभाषी रहा।

मिशन स्कूल लाहौर में पढ़ते समय जब वहाँ के प्रिंसिपल ने आर्यो की निन्दा करते हुए, उन्हें अनेक देवों पत्थरों व वृक्षों की पूजा करने वाला बताया तो आपने इसे आर्य जाति का अपमान समझते हुए तुरन्त खड़े होकर सप्रमाण उत्तर दिया कि आर्य लोग अनेक देवों या जड़ के पूजक नहीं, अपितु केवल एक ही ईश्वर ओ३म् के उपासक थे और हैं। प्रिंसिपल ने इसे सुनकर अपना अपमान समझकर उन्हें स्कूल से बाहर निकल जाने का आदेश दिया। स्वाभिमानी महात्मा हंसराज जी तब तक स्कूल नहीं गए जब तक एक अच्छे बुद्धिजीवी विद्यार्थी की कक्षा में न होने की कमी समझ कर उन्हें स्वयं प्रिंसिपल ने नहीं बुलाया। देश भर के विद्यार्थियों को इस घटना से शिक्षा लेकर जैसे पाठ्यक्रम में आर्यो के मांसाहारी अथवा बाहर से आए हुए का भ्रामक पाठ पढ़ाया जाएँ तो उनका विरोध करना चाहिए और आर्यो को आर्यावर्त का मूल नागरिक लिखना चाहिए।

पाठक वृन्द! महात्मा हंसराज जी ने इस घटना से यह सिद्ध कर दिया कि पढ़ाई का प्रयोजन मात्र धन व ऊँचा पद नहीं अपितु अपनी संस्कृति का रक्षक होना भी है। सन् 1885 में आप बी.ए. परीक्षा में पूर्ण पंजाब में (हिमाचल-हरियाणा सहित) दूसरे स्थान पर उत्तीर्ण रहे। यह उन दिनों की बात है जब ग्रेजुएट होने पर अंग्रेजी सरकार में 'एकस्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर' का पद मिलता, स्वतन्त्र स्वदेशी स्वाभिमान को प्रकट करते हुए गोरों के ए.अ. कमिश्नर पद को ठोकर मार दी। महात्मा जी के विद्यार्थीकाल की इस घटना से शिक्षा लेकर भारत के विद्यार्थियों को केवल धन के लोभ में ऐसी किसी कम्पनी या विदेशी नौकरी को स्वीकार नहीं करना चाहिए जिससे कि माँ भारती का मान नीचा हो।

गवर्नमेन्ट कॉलेज लाहौर में पढ़ते समय आपकी सहपाठी के रूप में लाला लाजपत राय एवं पण्डित गुरुदत्त जी विद्यार्थी से भेंट हुई। तीनों ही महानुभाव वैदिक धर्मी एवं महर्षि दयानन्द महाराज की विचारधारा के परम भक्त थे। 30 अक्टूबर 1883 में ऋषि दयानन्द का मुस्लिम हकीम एवं अंग्रेज ऑफिसर के षड्यन्त्र के कारण स्वर्गवास हो गया। महर्षि दयानन्द की स्मृति में कोई स्मारक बनाया जाए ऐसा विचार करते हुए देश के बच्चों को अंग्रेजियत तथा ईसाइयत के जाल से बचाने हेतु 1886 में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक विद्यालय चलाने का निश्चय हुआ, जिसमें अंग्रेजी, संस्कृत सहित वेदों का अध्ययन कराया जाए, जिससे जनता, अंग्रेजी के कारण ईसाई स्कूलों से आकर्षित न हो और डी.ए.वी. विद्यालयों में आकर संस्कृत से संस्कृति तथा वेद से देशभक्ति की भावना वाले देशभक्त भावी नागरिक तैयार हों। महात्मा हंसराज जी ने अपने विद्यालयों में निःशुल्क रूप से प्रिंसिपल के पद पर रहते सेवा की, जिसमें प्रतिमास 40/- रूपये निजी खर्च हेतु उनके भ्राता श्री मुलखराज जी दिया करते थे। अधिक खर्च के भार से मुक्त शिक्षा के इस स्वदेशी आन्दोलन को आगे बढ़ाने हेतु आपकी प्रेरणा से लाला दीवान चन्द,प. मेहरचन्द, लाला देवीचन्द व क्रांतिकारी भाई परमानन्द जी डी.ए.वी. के आजीवन सदस्य बने। बालविवाह को रोकने हेतु महात्मा जी ने डी.ए.वी. में विवाहित युवकों को प्रवेश देना बन्द कर दिया। महर्षि दयानन्द के वैदिक मिशन को आगे बढ़ाने हेतु आप पंजाब, सिंध बलोचिस्तान की प्रा. प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे। हिन्दुओं से मुसलमान बने लोगों को पुनः आर्य बनने हेतु आगरा, उत्तर प्रदेश में भा.हिन्दू

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'आर्य-प्रेरण' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ऋग्वेद अथर्ववेद ॥ ओ३म् ॥ सामवेद यजुर्वेद

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'

# आर्य महिला सम्मेलन

आदरणीय बहनों आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर का 71वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। आप सब सादर सप्रेम आमंत्रित हैं।

स्थान: आर्य समाज, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060

**दिनांक: शनिवार, 22 अप्रैल 2023, समय 2 बजे से 5:30 तक**

## कार्यक्रम

| | |
|---|---|
| यज्ञ | : 2 बजे से 02:40 तक |
| ब्रह्मा | : विदुषी बहिन सुश्री मृदुला चौटानी जी |
| ध्वजारोहण | : श्रीमती मोहिनी भल्ला जी, श्रीमती सुदर्शन ग्रोवर जी, श्रीमती प्रोमिला घई जी |
| ध्वज गीत | : आर्य महिला आश्रम की बहनें एवं मोहिनी वेद जी, सरोज सहगल जी, आदर्श सहगल जी, सुनीता सहगल जी, प्रवीण मेहता जी, सुनीता कपूर जी, विजय लक्ष्मी चुग जी, डॉ. नारायणी मलिक जी, राज किंगर जी, मोहिनी शर्मा जी, |
| ओ३म् संकीर्तन | : पूर्व प्रधाना सावित्री शर्मा जी, उमा अब्बी जी, वीना बजाज जी, सुशीला वर्मा जी |
| स्वागत गीत | : श्रीमती अमिता पान्डा जी |
| गीत/कव्वाली | : आर्य महिला आश्रम की माताओं/बहनों द्वारा, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली |
| अध्यक्षा | : श्रीमती उषा मलिक (प्रधाना जनकपुरी सी-3, पंखा रोड आर्य समाज) |
| मुख्य अतिथि | : डॉ. सन्तोष कपूर जी (प्रधाना टैगोर गार्डन आर्य समाज) |
| मुख्य वक्ता | : श्रीमती प्रतिभा जी |
| विषय | : ''मनुष्यमात्र के कल्याण का स्त्रोत वेद'' |
| विशिष्ट अतिथि | : श्रीमती शशि प्रभा जी, श्रीमती प्रकाश कथूरिया जी, श्रीमती रचना आहूजा जी, श्रीमती प्रेमलता भटनागर जी, श्रीमती इन्द्रा शर्मा जी, श्रीमती कान्ता आर्य जी, श्रीमती आरती खुराना जी, श्रीमती शशि मल्होत्रा जी, श्रीमती स्नेह तुली जी, श्रीमती उमा आर्य जी, श्रीमती चन्द्र आनन्द जी, श्रीमती सीमा बजाज जी तथा पश्चिम बिहार वेद प्रचार मंडल, आर्य समाज योग कक्ष परिवार, वैदिक संन्ध्या समूह परिवार। |
| विशेष आमंत्रित | : डॉ. सन्ध्या जी, श्रीमती सुरेखा महाजन चोपड़ा जी |
| शुभकामनाएं | : श्रीमती सिमी बजाज जी |
| गरिमामयी उपस्थिति | : सुमन चावला जी, श्रीमती वीना राजपाल जी, श्रीमती ज्योति ढीगड़ा जी, श्रीमती आनन्द सब्बरवाल जी, श्रीमती मानसी मेहता जी, श्रीमती प्रोमिला भल्ला जी, श्रीमती नीलम राहताग जी, श्रीमती मंजू शर्मा जी (आर.डब्लू.ए) |
| अध्यक्षीय भाषण | : श्रीमती उषा मलिक जी |
| संयोजिका | : श्रीमती ललिता कुमार |
| धन्यवाद | : श्रीमती उमा अब्बी जी (प्रधाना राजेन्द्र नगर, आर्य स्त्री समाज) |
| शान्तिपाठ | : श्रीमती सकुन्तला कालरा जी (मंत्रीणी आर्य स्त्री समाज, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली) |

नोट: जलपान की व्यवस्था है। आप सब जलपान अवश्य ग्रहण करें।

**आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली, सम्पर्क 011-40224701**

सम्पादकीय

# वेदों की हिन्दी टीका ऋषि दयानंद की देन

❑ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

महर्षि दयानंद सत्य, धर्म की स्थापना और मानव जाति की उन्नति को अपने जीवन का लक्ष्य मानते थे। उनकी पीड़ा थी कि अज्ञान, साम्प्रदायिकता तथा धार्मिक अंधविश्वासों में फंसी मानव जाति को सत्य और धर्म का दिग्दर्शन कैसे कराएं? उन्होंने अपने मन से कोई मत और सम्प्रदाय स्थापित नहीं किया। वे तो प्राचीन वैदिक धर्म को जो ईश्वरीय ज्ञान है निर्भ्रान्त बुद्धि, ज्ञान, तर्क से मानव जाति के लिए, उनके कल्याणार्थ समस्त विद्या का ज्ञान पूरे संसार में फैलाना चाहते थे। स्वामी दयानंद ने मानव को पुरुषार्थ का मंत्र पढ़ाया, अंध विश्वास से हटकर विद्या और ज्ञान का मार्ग दिखाया। वे हमेशा सत्य के अन्वेषी रहे, असत्य को त्यागने और सत्य को मानने के लिए वे हमेशा तत्पर थे। उन्होंने लोगों को स्वराज और राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाया। ऋषि दयानंद ने धर्म का वास्तविक अर्थ सदाचार, कर्त्तव्यपालन तथा मानवतावाद को बताया। सर्व प्रथम ऋषि दयानंद ने ही वेदों का हिन्दी भाषा में अर्थ प्रकाशित कराया। सदियों से आलमारियों में कैद वेद को मानव जाति तक पहुंचाने का श्रेय दयानंद जी को है।

स्वामी दयानंद जी ने वैदिक शब्दों का अर्थ प्रसंगानुसार तथा प्राचीन ऋषियों द्वारा स्थापित भाषा, ज्ञान, निरुक्त, और अष्टाध्यायी के आधार पर किया। स्वामीजी ने अहसास कराया कि हम कितनी समृद्ध विरासत के स्वामी हैं। यह विश्वास हमें अंधविश्वासों तथा वहमों से छुटकारा दिलाता है। यह मत मतान्तरों में फंसने से बचाता है और विश्व समुदाय में एक गौरवपूर्ण स्थान का अधिकारी बनाता है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबल साधन है इसलिए ऋषि दयानंद ने अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध, राज्य की जिम्मेदारी ठहराते हैं और कहते हैं कि- 'गुरुकुल में सम्पूर्ण शिक्षा नि:शुल्क होनी चाहिए, सब छात्रों को खान, पान तथा आसन के व्यवस्था की वकालत भी दयानंदजी करते हैं। ईश्वर का वेदोक्त स्वरूप ऋषि दयानंद ने जो हमारे सामने रखा वह अनूठा, मौलिक, तर्क संगत और विज्ञान संगत है। सृष्टि में सर्वत्र क्रम, व्यवस्था और नियमबद्धता है इसलिए इस ब्रह्मांड के नियंता की सत्ता में विश्वास आना विज्ञान और तर्कसंगत दोनों है। ऋषि दयानंद ने सृष्टि के नियमों को नित्य, अनादि और सार्वभौम बताया। वेद का यथा पूर्व सिद्धांत प्रस्तुत कर ऋषि ने क्रांति कर दी। 'सत्यार्थ प्रकाश' महर्षि दयानंद के मौलिक विचारों का ग्रंथ है। ऐसा ग्रन्थ जिसने मानव समाज को एक सिरे से दूसरे सिरे तक हिलाकर रख दिया था, इसने नवीन सामाजिक ख्रष्टिकोण को जन्म दिया। वेदों की हिन्दी में टीका स्वामी दयानंद की अपूर्व देन है।

## स्वस्थ शरीर

**समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः। प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते।** - सुश्रुत। जिस मनुष्य के वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष सम अवस्था में हों, जिसकी जठराग्नि न अधिक तेज, न अधिक मन्द हो, जिसकी रस रक्तादि सप्त-धातुयें समुचित मात्रा में बनती हों तथा शरीर में स्थिर रहती हों, जिसकी मल-मूत्रादि की क्रिया ठीक होती हो, और जिसकी दशों इन्द्रियों कार्य करने में सक्षम हों तथा मन और आत्मा प्रसन्न हों, वही व्यक्ति स्वस्थ होता है।

# आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली का 71वां वार्षिकोत्सव

शनिवार 22 अप्रैल 2023 से रविवार 30 अप्रैल 2023 तक सामवेदीय बृहद यज्ञ, भजन, प्रवचन

## दैनिक कार्यक्रम

सोमवार 24 अप्रैल से शनिवार 29 अप्रैल तक **प्रातः कालीन सत्र**

**सामवेदीय वृहद यज्ञ प्रातः 6:30 से 8:00 बजे तक**

**यज्ञ ब्रह्मा- आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, वेदपाठी-ब्रह्मचारियों द्वारा**

**सायंकालीन सत्र** बुधवार 26 अप्रैल से शनिवार 29 अप्रैल तक

**भजन-सायं 7.00 से 8.00 बजे तक श्री भानुप्रकाश शास्त्री जी (बरेली)**

**वेदप्रवचन**-रात्रि 8.00 से 9.00 बजे तक **आचार्य शिवदत्त पाण्डेय जी (सुल्तानपुर)**

**प्रतिदिन रात्रि वेद प्रवचन के पश्चात् प्रीतिभोज की व्यवस्था है।**

## पूर्णाहुति एवं समापन समारोह

**रविवार 30 अप्रैल 2023**

| | | |
|---|---|---|
| **यज्ञ पूर्णाहुति** | : | प्रातः 8.00 से 9.00 बजे तक |
| **ध्वजारोहण** | : | 9.00 से 9:15 तक |
| **प्रसाद वितरण** | : | 9:15 से 9:45 तक |
| **भजन** | : | 9:45 से 10:15 तक **श्री भानुप्रकाश शास्त्री जी** (बरेली) |

## आर्य महासम्मेलन

**विषयः राष्ट्रनिर्माण में स्वामी दयानन्द जी की भूमिका**

**अध्यक्षता** : **आचार्य गवेन्द्र शास्त्री**

**वक्ता** : **डॉ. महेश विद्यालंकार जी, आचार्य शिवदत्त पाण्डे जी**

**मुख्य अतिथि** : **डॉ. देवेन्द्र राय जी (ENT Specialist Sir Ganga Ram Hospital)**

**श्री आनन्द चौहान (निर्देशक एमेटी यूनिवर्सिटी)**

**विशिष्ट अतिथि** : **अजय सहगल जी (मन्त्री टंकारा ट्रस्ट)**

**पारितोषिक वितरण** 12.30 बजे, **धन्यवाद**-श्री अशोक सहगल जी, **ऋषि लंगर** 1:00 बजे

**सौजन्य से:** स्व. श्री द्वारकानाथ जी सहगल एवं माता वैष्णो देवी सहगल जी के सुपुत्र श्री अशोक सहगल जी पुत्रवधू श्रीमती सुनीता सहगल जी के परिवार तथा विवेक सहगल इनडस्ट्रीज की ओर से।

**निवदेकः** अशोक सहगल (प्रधान), विकास मैहता (मन्त्री), सतीश मैहता (कार्यकारी प्रधान), सतीश कुमार (कोषाध्यक्ष), **आर्य समाज राजेन्द्र नगर**, उमा अब्बी (प्रधाना), सकुन्तला कालरा (मन्त्राणी), **आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर**, आदर्श सहगल (प्रधाना), वीना बजाज (कार्यकारिणी प्रधाना), जगदीश बधवा (मन्त्राणी), **आर्य महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर**, सुशीला वर्मा (प्रधाना), संगीता खन्ना (मन्त्राणी), **आर्य स्त्री समाज, (बहावलपुर) राजेन्द्र नगर।**

# MESSAGE OF GITA

❑ Dr. Mahesh Vidyalankar

*Cotinue from last issue*

"One who is born must die one day. So shall the dead be born again." This is inviolable. The death performs two functions. It alienates the man from one point and aligns him with the other. One of the meanings of mrityu (the death) is: it converts the body simply into dust. The death is the attribute of the body. Broadly speaking, the death is the name of body-change. Since the advent of creation, life and death have been going on together. Scared of the death, one may run away from home to a distant place, the death will chase him there too. Many incidents report that a person bound for a certain destination, finally landed elsewhere. Every person is carrying a ticket of death in his pocket. We do not know, who has to travel how long and whereto. All people are standing in the death queue. The moment, one is born, he starts inching forward to death. When one dies, we should feel that we too will die certainly. The death has warned us too. Be prepared, your turn is due. The death will claim you one day.

Gita says, "The body is made up of fire, water, air, earth and sky. In the event of death all these merge into respective universal elements. Nothing is destroyed in the world. It only undergoes transformation." Giving up the body is death and entry of the soul into the new body is rebirth. The death is like sleep. After the sleep, the man feels refreshed and rejuvenated. Similarly, when the body is weakened and exhausted and is no longer a functional entity, then the soul abandons it and enters into a new one. As a snake changes its slough, so does the soul changes the old body. The death is the gateways to the next life. We shall get the new one, after we have given up the old one. Hindi expression, 'चल बस' (has departed) conveys that the soul has left this abode and settled down in the other.

Lord Krishna says to Arjuna, 'death is like nectar and a teacher; The death rather inspires a man to get rid of unrighteousness, sins, quarrels and vices. The scene of death helps a man to keep away from wrongdoing if there were no fear of death, a man would have almost become immoral. it is the death which saves the man from falling prey to ego and finally face downfall. The death helps the man to perceived the truth. The scene of the cremation place arouses in the man a question for knowledge and indifference to the world. Awareness of death is helpful in avoiding harmful activities. If a man has learnt that one day he shall have to leave the world for good empty-handed, he will ask himself, "shy to indulge in quarrels, controversies, greed and conflicts? Why to amass the ill wealth of unrighteousness and sins? I came to this world fist-bound and shall go away with me. nor shall I carry anything with me." If we have such thoughts and feelings in our mind, we can avoid many ills in course of our life. Remembrance of death provides for elevation of the self and nearness of God.

## भावभिनी पुण्यतिथि

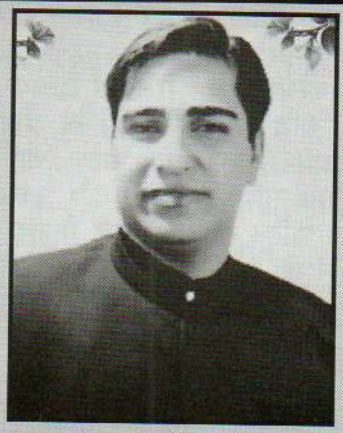

### स्व. श्री विवेक सहगल

जन्म 7 जुलाई 1980, प्रयाण 16 अप्रैल 2005

रोते हैं वो पंख पखेरु साथ तेरे
जो खेले जिनके साथ
लगायें तूने अरमानों के
भीगी आँखों से तू उनकी
आज दुआयें लेले
किसको पता अब इस नगरी में
कब हो तेरा आना।

आपका स्नेह सद्व्यवहार धर्म परायणता सेवा भावना एवं प्रेरणादायक चरित्र सदैव मार्ग दर्शन करेगा आपको शत्-शत् नमन करते हुए अश्रपूरित श्रद्धांजलि।

समस्त सहगल परिवार एवं विवेक सहगल इन्डस्ट्रीज की ओर से शत्-शत् नमन

## राष्ट्र रक्षा यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के तत्वावधान में अमर-शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के 92वें बलिदान दिवस पर राष्ट्र रक्षा यज्ञ किया गया। सत्यार्थ प्रकाश ने उनके जीवन को प्रभावित किया। देश के लिए अपना बलिदान दिया। ऐसे राष्ट्र भक्त महान क्रान्तिकारी भगतसिंह ने कहा था जिन्दगी तो अपने दम पर ही जी जाती है दूसरों के कन्धों पर तो सिर्फ जनाजे उठाये जाते।

-भीष्म लाल

(पृष्ठ 1 का शेष)

शुद्धि सभा के उपप्रधान बनाए गए। मलकाना राजपूतों की वृन्दावन, मैनपुरी आदि में शुद्धि हेतु आन्दोलन चला लाखों राजपूत जो कभी किसी कारण से मुसलमान बन गए थे। उन्हें पुन: शुद्ध करके आर्यहिन्दू धर्म में प्रवेश दिलाया गया। शिक्षा, शुद्धि व वैदिक धर्म के प्रचार के साथ-साथ महात्मा श्री हंसराज जी अपने सहयोगियों सहित समाज सेवा व भूकंप तथा अकाल पीड़ित लोगों की सेवा में सदा प्रथम पंक्ति में रहे। उन्होंने 1895 से 1897 बीकानेर में दो बार अकाल, 1905 में कांगड़ा भूकम्प, 1907-1908 में अवध अकाल व मुलतान की प्लेग महामारी, 1921 में शिमला, जम्मू, कांगड़ा अकाल, 1921 से 1922 मद्रास के मालाबार में मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं के कत्ले आम व वैसे ही 1924 और 1932 में सीमा प्रांत कोहाट तथा जम्मू में मुसलमानों द्वारा आतंकी दंगे करने एवं 1934 व 1935 में बिहार और कोयटा के भूकम्प पीड़ितों की तन मन धन से सेवा की। 3 नवम्बर 1927 को आर्य कांग्रेस नाम का एक अधिवेशन आर्यधर्म के विकास हेतु रखा गया। इस अधिवेशन का सभापति महात्मा हंसराज जी को बनाया गया। अपने विचार रखते हुए महात्मा जी ने कहा धार्मिक तथा सामाजिक कार्य तो आर्य समाज कर ही रहा है, परन्तु राष्ट्रीय कार्य हेतु भी हमें 'कांग्रेस' के साथ मिलकर कार्य करने की अपेक्षा स्वयं संगठित हो कार्य करना चाहिए। आर्यजन इस दूरदर्शी चिन्तन को आज भी ध्यान में रख किसी गोहत्यारी इतिहास हत्यारी वैदिक आर्य हिन्दू हत्यारी पार्टी के साथ कभी न जुड़ना चाहिए। तन-मन-धन समर्पित सादगी के प्रतीक स्वदेशियत के रंग में रंगे, देश स्वाभिमानी दु:खी लोगों के सदा सेवाभावी संत का 15 नवम्बर, 1938 को 74 वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हुआ। **मो. 9459701516**

## प्रभु नाम तू सिमर ले...

प्रभु नाम तू सिमर ले,
कहीं रात ढल न जाये
जीवन का क्या भरोसा,
कहीं जा निकल न जाये
दुनिया के झंझटों में,
जीवन है तेरा बीता
किस काम से तू आया,
किस काम बीत जाये
**प्रभु नाम तू सिमर ले....**

# बाल सम्मेलन रविवार 23 अप्रैल 2023

| | | |
|---|---|---|
| प्रात: 7:30 बजे | : | पंजीकरण प्रतिभागियों द्वारा |
| प्रात: 8:00 बजे | : | हवन |
| प्रात: 9:00 बजे | : | उद्घाटन व ध्वजारोहण<br>श्री विजय तनेजा जी, श्री सतीश कुमार जी |
| अध्यक्षता | : | श्री राज बजाज जी |
| मुख्य अतिथि | : | श्री मोती लाल जी (बीकानेरवाला आंगन)<br>श्रीमती चित्रा नाकरा, श्रीमती रजनी नाकर |
| विशिष्ट अतिथि | : | श्रीमती सरिता जैन (B.K. Jain Diagnostic) |
| प्रात: 9.00 बजे से 1.00 तक | : | प्रतिभागियों द्वारा कार्यक्रम<br>चित्रकला प्रतियोगिता ( 3 वर्गों में)<br>कक्षा 10वीं तक के विद्यार्थियों के लिए<br>(स्व. श्री विवेक सहगल की स्मृति में श्रीमती सुनीता जी एवं श्री अशोक सहगल जी के सौजन्य से) |
| (नोट: प्रतियोगी कलर एवं ड्राइंग बोर्ड स्वयं लेकर आये) | | |
| वाद-विवाद प्रतियोगिता | : | (कक्षा 9 से 12वीं तक के विद्यार्थियों एवं स्नातक के लिए) (समय 5 मिनट)<br>(शिक्षाविद् स्व. श्री सदानन्द चुघ जी की स्मृति में चुघ परिवार के सौजन्य से) |

**महर्षि दयानन्द जी के 200वें जयन्ती व 150वां स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में**

| | | |
|---|---|---|
| देश भक्ति गीत प्रतियोगिता | : | फिल्मी गीत प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे (समय 5 मिनट)<br>(स्व. श्रीमती राजलाल जी की स्मृति में माननीय श्री सतीश कुमार कोषाध्यक्ष द्वारा) |
| लघुनाटिका | : | स्व. श्रीमती जनक चुघ जी की स्मृति में श्रीमती संगीता एवं श्री राजीव खन्ना जी के सौजन्य से |
| प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता | : | स्व. श्री नेभराज आर्य जी एवं स्व. अमृत आर्य जी की स्मृति में पुत्र-वधू श्रीमती रीटा आर्या जी एवं सुनील आर्य जी के सौजन्य से |

**संयोजक:**
**सुनील आर्य**
मो. 7982022420

**उद्घोषक:**
**संगीता खन्ना**

**सह संयोजक:**
**सुरेश चुघ**
मो. 9811167514

**पारितोषिक वितरण 30 अप्रैल 2023 रविवार**

**नोट: अधिक जानकारी के लिए श्री अनिल जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, दूरभाष नम्बर 011-40224701 पर सम्पर्क करें।**

# शुद्धि आन्दोलन के प्रणेता-पं. लेखराम

6 मार्च 2023 को आर्य समाज राजेन्द्र नगर में पं. लेखराम के श्रद्धांजलि के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें ब्रह्मचारी राज कुमार और संजीव आर्य ने भजन प्रस्तुत किये। पं. लेखराम सत्यनिष्ठ, धर्मवीर, आत्मा, बलिदानी, पं. लेखराम अडिग ईश्वर विश्वासी, महान मनीषी, आदर्श धर्म प्रचारक तथा एक अच्छे लेखक थे। धर्मान्तरण रोकने और धर्मान्तरित लोगों की घर वापसी व शुद्धि करण के लिए ही पण्डित लेखराम ने अपना जीवन आहूत कर दिया।

**- विजय तनेजा**

# आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

22 मार्च 2023 को आर्य समाज राजेन्द्र नगर में आर्य समाज राजेन्द्र नगर में आर्य समाज स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। इसका प्रारम्भ प्रात: यज्ञ हवन से किया गया। जिसमें पधारे सभी आर्य जनों ने अपनी-अपनी आहुती प्रदान की। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने आर्य समाज के द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों पर अपना विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी शिक्षा के लिए अनेकों गुरुकुल खोले और उनको भी जीवन जीने के लिए समान अवसर प्रदान किये। सकुन्तला कालरा ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पर आधारित एक मधुर भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के अन्त में प्रधान अशोक सहगल जी ने पधारे हुए आर्यजनों को नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

**-सुनील आर्य**

# 9 दिवसीय यज्ञ भजन प्रवचन का आयोजन

आर्य समाज ग्रुप हाउसिंग विकासपुरी, नई दिल्ली के तत्वावधान में 9 दिवसीय यज्ञ, भजन, प्रवचन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आर्य जगत् के युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने कहा आप अपनी संतान को धन दे लेकिन धर्म साथ दे उन्हें सम्पत्ति दे पर अच्छे संस्कार दे अन्यथा धन आपके बच्चों को बिगाड़ देगा धर्म और संस्कार उन्हें अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते है। धर्म से आपको उन सद्गुणों का ज्ञान होता है जिनसे आप जीवन को सुखी बना सकते है। आपको श्रद्धा और विनम्रता का बोध कराता है। श्रद्धा ज्ञान देती है। विनम्रता मान देती है। आप जितने श्रद्धावान होंगे उतने ही विनम्र होगें। आचार्य अनिल शास्त्री एवं अरविन्द शास्त्री ने भी अपने विचार रखें।

**-सकुन्तला जुनेजा**

# जीवन में रामायण को उतारना

आर्य समाज राजेन्द्र नगर में राम नवी के उपलक्ष्य में यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा-आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने कहा रामायण जीवन के आदर्श सत्य आचरण का उत्कर्ष है। रामायण में जितने भी पत्र हैं गिलहरी से लेकर भगवान राम तक सभी अनुकरणीय हैं। आर्य समाज राजेन्द्र नगर के ब्रह्मचारियों ने भजन प्रस्तुत किया।

# आशा, उत्साह का पर्व-होली

आर्य समाज राजेन्द्र नगर में होली पर्व को मनाया गया। जिसका प्रारम्भ प्रात: हवन से प्रारम्भ हुआ और उसके पश्चात सभी आए हुए गणमान्य जन ने एक दूसरे को गुलाल लगाकर प्रसन्नतापूर्वक एक-दूसरे से मिलें। भारतीय संस्कृति में त्योहारों का महत्वपूर्ण स्थान है और उनमें से एक होली है। इस प्रकार यज्ञ, भजन से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और अन्त में प्रसाद वितरित किया गया।

**- गौरी शंकर धवन**

# शोक समाचार

आर्य समाज बिरला लाइन्स कमला नगर, दिल्ली के धर्माचार्य एवं आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के मन्त्री आचार्य कुँवरपाल शास्त्री जी की पूज्या माता श्रीमती राममूर्ति देवी जी का 82 वर्ष की आयु में दिनांक 12 मार्च, 2023 को पैतृक ग्राम चंदू नगला जिला-सम्भल, उत्तर प्रदेश में आकस्मिक निधन हो गया। माता जी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से भागीरथी के तट, अनूप शहर में किया गया।

# श्रद्धांजलि

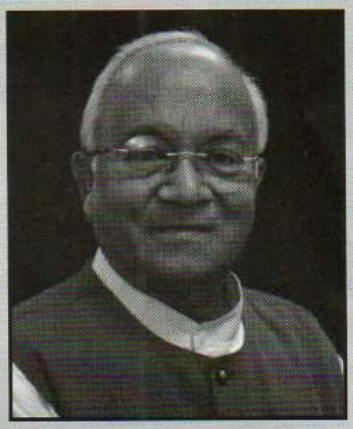

सुप्रसिद्ध पत्रकार, आर्य समाज के चिंतक, हिन्दी के पुरोधा डॉ. वेद प्रताप वैदिक का मंगलवार 14 मार्च 2023 को गुरुग्राम में 79 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर की ओर से भावभीनी श्रद्धांजली।

R.N.I.No. DEL BIL/2007/22120
Date of Publication 20-03-2023

Delhi Postal R.No. DL(C)-14/1431/2021-23
Posted at SRT Nagar PO, New Delhi-55
Posting Date: 7-8 Every Month

सेवा में,

आर्य प्रेरणा
अप्रैल-2023

# महर्षि दयानन्द की 200वीं जयंती और 150वां स्थापना दिवस

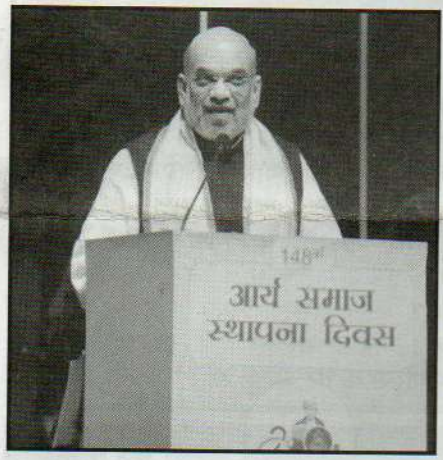


आर्य समाज के 148 वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के संयुक्तफ तत्वावधन में विशेष आयोजन 21 मार्च 2023 को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम मे अपनी अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय श्री अमित शाह जी का उद्बोध्न विशेष रूप से प्रेरणा का आधर बना और गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत की अध्यक्षता में पूरा कार्यक्रम ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। इस अवसर पर श्री अमित शाह जी ने आर्य समाज की यज्ञ वेदी पर विराजमान होकर अपने कर कमलों से आहुति दी। महर्षि दयानंद सरस्वती के महान व्यक्तिव, आर्य समाज के सेवा कार्य और महर्षि के उपकारों को स्मरण करते हुए उन्होंने आर्य समाज को आगे बढ़ाने का यह विशेष अवसर बताया और नई ऊर्जा के साथ आर्य समाज आगे बढे, यह आह्वान भी किया। सभा द्वारा संचालित आर्य विद्यालयो ं के छात्रा–छात्राओ ं ने महर्षि दयानंद की महिमा का गुणगान करते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। आर्य वीर दल के वीरों ने आर्य समाज के सेवा भावी इतिहास को आधार बनाकर सुंदर प्रस्तुति दी तथा वर्तमान के ज्वलंत मुद्दों की ओर उपस्थित जनसमूह का ध्यान आकृष्ट करते हुए रिश्ते बचाइए, जातिवाद, ऊंच नीच का भेदभाव मिटाइए, गले लगाइए, प्राकृतिक खेती को अपनाइए, समाज को नशामुत्तफ बनाइए, यौवन बचाइए आदि विषयों पर रोचक और प्रेरक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उपस्थित आर्य जनों ने बच्चों का उत्साह वर्धन किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, श्री पूनम सूरी जी, श्री अशोक चौहान जी, श्री योगेश मुंजाल जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी इत्यादि महानुभावों को भी स्मृति चिन्ह एवं भेंट देकर सम्मानित किया गया। सर्वश्री गंगा प्रसाद जी, स्वामी प्रवणानन्द सरस्वती जी, सुरेन्द्र कुमार रैली जी, प्रकाश आर्य जी, राधकृष्ण आर्य जी, सतीश चड्डा जी, विद्या मित्रा ठुकराल जी, राकेश ग्रोवर जी, विकास आर्य जी चेन्नई इत्यादि महानुभाव मंच पर उपस्थित थे। इसके उपरांत विनय आर्य जी द्वारा आर्य समाज की ओर से कुछ विशेष प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए। **1.** प्रदूषण मुत्तफ वातावरण एवं आत्मनिर्भर भारत की संरचना को मूर्त रूप देने के लिए आर्य समाज की समस्त इकाई अगले दो वर्षों में अपनी ऊर्जा खपत का न्यूनतम 50 प्रतिशत सौर उर्जा पर परिवर्तित करने का संकल्प अभिव्यत्तफ करती है। **2.** भारत की एकता और अखंडता के खिलाफ कार्य कर रही अलगाववादी ताकतों के विरुद्ध भारत सरकार द्वारा उठाए हर कदम का आर्य समाज पूर्ण समर्थन करता है। **3.** भारत सरकार द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट में समलैंगिक विवाहों का विरोध करते हुए शपथ पत्र दाखिल किया है। आर्य समाज सरकार के इस कदम का स्वागत एवं समर्थन तो करता ही है साथ में सुप्रीम कोर्ट में अपना पक्ष भी रखेगा यह आश्वासन देता है। **4.** हिंदी भाषा की उन्नति हेतु चिकित्सा की उच्च स्तरीय पढ़ाई का पाठड्डक्रम हिंदी में लागू करने के कदम का आर्य समाज हार्दिक अभिनंदन करता है। उपरोत्तफ प्रस्ताव उपस्थित आर्य समाज के समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित आर्यजनो ं से खचाखच भरे स्टेडियम मैं सभी ने ओम ध्वनि के साथ अपनी स्वीकृति और सहमति प्रदान की।

–विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

Printed and published by Mr. Narinder Mohan Walecha secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Mayank Printers, 2199/63, Naiwala, Karol Bagh, New Delhi-110005 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. Editor: Aacharya Gavendra Shastri